रिकॉर्डः– प्रीतम आन मिलो..... ॐ पिता श्री 15/6/64
ओमशांति। पुरुषार्थियों के लिए एक ही ये पुकार का है। अब ये किसने पुकारा और किसको? ये तो सिर्फ तुम बच्चे जानते हो; क्योंकि तुमने बाप द्वारा बाप को जाना है। बाप ने समझाया है फादर शोज़ सन, फिर सन शोज़ फादर। ऐसा (गायन) है। अब प्रीतमाएँ सब प्रीतम को पुकारते हैं। ये गीत कृष्ण के लिए गाया हुआ है। सबके साथ कृष्ण के साथ प्रीत तो है ही। कृष्ण के भगत समझते कृष्ण ने राजयोग सिखाया। ... वास्तव में प्रीतम सबका एक ही है। सर्व पतितों को पावन बनाने वाला एक है। निराकार को ही याद करते हैं; परन्तु परमपिता परमात्मा को फिर यथार्थ रीति जानते नहीं। निराकार का यथार्थ अर्थ ही क्या है सो जानते नहीं। बाप ने समझाया है। वास्तव में एक ही राम है। हे! प्रभु, हे! ईश्वर, ओ! गॉड एक को पुकारते हैं कोई जिस्मानी मनुष्य वा देवता को नहीं पुकारते। बुद्धि निराकार तरफ चली जाती है गॉड फादर सबका एक ही है। समझते हैं हम सब भाई हैं; परन्तु हर एक अपने धर्म का है। अपने धर्म के भाई–बहन भी लड़ते रहते। जब सब दुखी होते हैं तो बाप कहते मुझे याद करते हैं; क्योंकि सर्व का पतित–पावन मैं ही हूँ। प्रीतम तो सब पुरुषार्थियों का एक ही है। सजनी साजन को याद करती है। बुलाने वाली तो आत्माएँ हैं, शरीर तो नहीं। जीव आत्मा जीव आत्मा से बात करती है। दुनिया में मनुष्य देह–अभिमानी होने कारण अपन को मनुष्य समझती है। तुम बच्चों को ये पक्का–2 निश्चय है। समझना है जीव की आत्मा बोलती है आत्मा प्यार करती है। शरीर शरीर से प्यार नहीं करते। आत्मा शरीर धारण करती है। आत्मा प्यार करती है, शरीर धारण करती है। इस समय का प्यार भी अशुद्ध है। देवी–देवताओं का प्यार तो ज़रूर शुद्ध होगा। तुमने सुना होगा अख़बार आदि से कुमारियाँ बिगर कोई (ये लाइन मिटी हुई है।) .....
.....

परन्तु प्यार तो अनेक प्रकार के होते हैं। मोर डेल का भी प्यार है ना। आँसू का जल है जिसे ..... शरीर बनता है। एक बूँद से जानवर का गर्भ हो सकता है तो पता नहीं और भी कोई प्यार की रीत हो। तो ऐसे क्यों कहना चाहिए, देवताएँ ज़रूर विकार से जन्म लेते हैं। विकार माना नगन करना। तुम बच्चों को नगन होने से 21 बार बचाते हैं। उन्होंने फिर द्रौपदी के चीर हरण का नाटक बना दिया है। यह सब फालतू बाते (हैं।) पाण्डवों को राज्य कहाँ है जो वनवास मिला आदि। सो भी 5 पाण्डव दिखाते हैं। फिर क्या–2 दिखाया जुआ खेली तो स्त्री दाँव में रखी। कितनी नॉनसेन्स बातें हैं। तुम किसको बैठ समझाओ तो सुनकर बड़ा खुश होवे। तुम कहते हो बाबा सर्विस नहीं होती है; परन्तु सर्विस के नमूने तो बहुत बतलाते हैं। अभी दशहरा आता है, देवियों की पूजा भी सब जगह होती है। तो वहाँ भी जाकर समझाना चाहिए। बा(प) की पहचान देनी चाहिए। वो है प०पि०प० निराकार बाप। हम आत्माएँ भी मूलवतन में रहती हैं। वतन घर को भी कहा जाता है। हम आत्माओं का बाप भी वहाँ परमधाम में रहते हैं। बाप सभी को भेज देते हैं। यह भी ड्रामा अनुसार ऑटोमैटिकली चलता रहता है। उनको भी अपने समय पर आना है। ... एक बाप है, बाकी सब हैं आत्माएँ। यह है मनुष्य सृष्टि। उनमें दैवीगुण वाले मनुष्य ल०ना० थे सतयुग में। बा(की) कोई 8/10 भुजा वाले मनुष्य तो होते नहीं। यह कहाँ से आए? पूजा जहाँ होती है वहाँ तुमको इनोसेंट हो जाकर पूछना चाहिए, यह क्या है? रुद्र यज्ञ भी बहुत होते हैं। साहुकार लोग यज्ञ आदि बहुत कराते रहते हैं। तुम कहाँ भी रमण कर सकते हो। तुम रमता योगी हो। जो जिस–2 देश में रहने वाले हैं वहाँ सर्विस क(र) सकते हैं। यह कौन है, जो इन्हों की पूजा होती है? क्या करके गए हैं? किसकी संतान है? ऐसे–2 बैठ पूछना चाहिए फिर समझाना चाहिए; क्योंकि तुम जानते हो सब बुद्धिहीन, नैनहीन, अंधे हैं। उन्हों का कल्याण करना है। रहमदिल बनना चाहिए। मुफ्त पैसे बरबाद कर रहे हैं। सर्विस तो बहुत है। अभी दशहरा आता है। रावण का चित्र बहुत अच्छा बना था। उनमें कुछ इम्प्रूवमेंट होना चाहिए। टाइम लिख... चाहिए रावण राज्य फलाने समय से फलाने समय तक। फिर विष्णु का राज्य फलाने समय से फलाने समय तक। यह ब्रह्मा का दिन, यह ब्रह्मा की रात। थोड़ी फेर–छेर कर फिर निकालना चाहिए। गवर्नमेंट भी प्रबंध सब रखती है। तो गवर्नमेंट को जाकर समझाना चाहिए। बरोबर अब रावण राज्य है ना। तो तुम रावण सम्प्रदाय ठहरे ना। वास्तव में तो तुम काँग्रेस सम्प्रदाय नहीं, रावण सम्प्रदाय हो। वो है विष्णु सम्प्रदाय अथवा दैवी सम्प्रदाय। यह है आसुरी सम्प्रदाय। बड़ों–2 को जाकर समझाना चाहिए। चित्र ले जाना चाहिए। कोशिश करनी चाहिए ऐसा बाण मारे जो नाम बाला हो जाए। बनारस में बहुत बड़े–2 टाइटल मिलते हैं सरस्वती आदि का। अब सरस्वती तो है जगदम्बा। भारतवासी सब जगदम्बा को मानेंगे। जगत को रचने वाली। तो ज़रूर पिता भी होगा। जगतपिता। ब्रह्मा और सरस्वती कहते हैं ना। ब्रह्मा तो हुआ प्रजापिता। सो क्रियेटर तो नहीं है। ब्रह्मा भी किसका बच्चा है ना। ब्रह्मा को भी क्रियेट करने वाला वो बाप है। सरस्वती भी ब्रह्मा की बच्ची है। ब्रह्मा भी मुखवंशावली है। ब्रह्मा को फिर रचने वाला कौन? गाया जाता है शिव परमात्माय नमः। वो हो गए देवता नमः। तो देवताओं का रचयिता वो शिव परमात्मा हो गया। उनसे वर्सा मिला होगा। तो तुम बच्चों को समझाने निकलना पड़े। जो–2 अच्छे समझदार हैं वो ही सर्विस पर निकलेंगे। बाप तो नहीं गली–2 में जावेंगे। यह बच्चों का काम है। सर्विस न करते हैं तो समझेंगे सर्विसएबुल नहीं हैं। तो पद भी ऐसा ही पावेंगे। भल बच्चे तो बने हैं; परन्तु पढ़ाई पर मदार है। जो जास्ती पढ़ेंगे वो ऊँचा पद पावेंगे। पढ़े हुए आगे अनपढ़ भरी ढोएँगे। पुरुषार्थ ऊँच पद पाने का करना चाहिए। यह शिवबाबा सन्मुख समझा रहे हैं। बाहर वाले बच्चे भी समझेंगे शिवबाबा मधुबन में मुरली चलाते होंगे। मुरली न आती है तो बच्चे हैरान हो जाते हैं, शिवबाबा की मुरली क्यों नहीं आती है; क्योंकि शिवबाबा की मुरली से ही हमारा हीरे

जैसा जन्म बनने का है। मुरली तो रोज़ सुनना चाहिए। 7 रोज़ की मुरली भी अगर किसके पास जाए कर बैठ पढ़ें तो वण्डर मिल जाए। पढ़ना ज़रूर चाहिए। कोई भी लूला–लंगड़ा, गूँगा भी यह पढ़ सकते हैं। कैसा भी बुखार में पड़ा हो तुम सिर्फ बोलो तुमको दो बाप हैं। तो जिसको वर्सा लेना होगा वो उसी समय इन दो अक्षर से भी समझ जावेंगे। यह नॉलेज ही ऐसा सहज है। बाप को याद करने से सारा चक्कर बुद्धि में आ जाता है। जितना चक्कर बुद्धि से फिरावेंगे तो चक्रवर्ती बनेंगे। बाप कहते हैं जो मेरे भक्त हैं अथवा ल०ना० आदि को मानने वाले हैं उन्हों को समझाओ, तुम ही देवी–देवता थे। 84 का चक्कर लगाया, अब फिर देवता बनो। यह (बाबा) भी ल०ना० पूज्य है ना। तुम ल०ना० के मंदिर में जावेंगे कल इनकी पूजा करते थे, आज हम वो बन रहे हैं। गुरुनानक वालों को भी तुम समझा सकते हो। मुख्य हैं ही 4 धर्म। तुम विचार करो गुरुनानक फिर कब आवेगा? आवेगा तो ज़रूर। समझाना बड़ा इज़ी है। तुम बच्चों को रहमदिल बनना है। जिसको सर्विस का शौक होगा वो सिखला(ने) वाले ब्राह्मण का साथ पकड़ेगा, हमको बैठ समझाओ। अगर सर्विस न करते हैं तो गोया हराम का खाते हैं। तुम खाते हो शिवबाबा के भण्डारे से। तो शिवबाबा की सर्विस करनी पड़े ना। सभी शिवबाबा के भण्डारे में डालते हैं। समझते हैं हम शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं। कितना ..... है। यहाँ तुमको जो मज़ा आता है वो घर में आए न सके। शिवबाबा के भण्डारे से खाते हैं तो मंसा–वाचा–कर्मणा सर्विस करनी चाहिए। मंसा सर्विस भी करनी है। याद करना है, पवित्र बनना है, शंखध्वन भी करनी है। कर्मणा कोई भी यज्ञ सर्विस करनी है। शुरू में मम्मा–बाबा भी बासन माँजते थे, छेना बनाते थे। देह–अभिमान तोड़ने लिए सब करते थे। अभी फिर बहुतों को दिन–प्रतिदिन देह–अभिमान बढ़ता जाता है। यज्ञ का खाते हैं तो सर्विस भी करनी चाहिए। बाप को याद कर(ने) से विकर्म विनाश होंगे। सर्वव्यापी कहने से विकर्म विनाश कैसे होंगे? सर्वव्यापी कहने से बुद्धि का योग लग नहीं सकता। तो यह सेवा सबकी करनी है। दान देना है। वो सेवा नहीं तो स्थूल सेवा करो। वो भी नहीं कर सकते हो तो धन की सेवा करो। तो वो भी सर्विस हो जावेगी। बीज बोया जाता है तो उसका फल निकलता। यहाँ चावल चपटी देने से महल मिल जाते हैं। किसको भी कहना नहीं है कि बीज बोओ। तकदीर में न ..... तो कब बुद्धि में आवेगा ही नहीं। साहुकार लोग होते हैं तो 5 लाख का भी इन्श्योर करते हैं। गरीब होगा तो 500 का इन्श्योर करेंगे। वो तो हुआ आसुरी सम्प्रदाय का। यहाँ फिर गरीब सबसे जास्ती इन्श्योर करते। मम्मा ने देखो क्या इन्श्योर किया। तन–मन से कितनी सेवा कर रही है। बहुत धन देने वालों को भी इत(ना) पद नहीं मिल सकता जितना इनको मिलता है। बहुतों की सेवा करती है। आप समान बनाती है इसलिए सब उनको याद करते हैं कि माँ आकर मुखड़ा दिखलाओ। हमको भी आप समान बनाओ। तुम हो मनुष्य को नर से नारायण बनाने वाले। यह नॉलेज है ही स्वराज्य योग। हरेक की बुद्धि समझ सकती है हम मम्मा–बाबा (को) फॉलो करते हैं। पुरुषार्थ करना चाहिए ना। यह ज्ञान सागर तो गलियों में नहीं जावेगा। मम्मा जा सकती है न .... बाबा भाषण कर सकते हैं। बाप कहते हैं मैं तो बच्चों के समाने बैठ भाषण करूँगा। मैं सबका बाप हूँ। तुम तो माताएँ कुमारियाँ हो तुमको जाकर भाषण करना है। फिर भी तुम बी.के. हो। मम्मा जगदम्बा है तो उनको भी रिगार्ड से ले जाना पड़ता है। निमंत्रण देंगे जगदम्बा–जगतपिता को। पिता को दिया तो दादा को दिया। यह तो बहुत बड़ा निमंत्रण हो गया। अभी तुम जगदम्बा को जानते हो। कितना बड़ा मेला लगता है। कुछ तो सर्विस करके गई है ना। तुम बतला सकते हो। वहाँ बहुत आते हैं। तुम जाकर समझाओ। यह जगदम्बा चेतन में थी, जिसका यह जड़ यादगार है। वहाँ तुम सर्विस कर सकते हो। सर्विसएबुल बच्चे आप ही सर्विस करते हैं। जो आप ही करे सो देवता। सुबह को जाओ, रात को लौट आओ। सर्विस करने की हिम्मत चाहिए। बहुत अच्छे–2 बच्चे हैं; परन्तु कोई न कोई बंधन में हैं। रुद्र ज्ञान यज्ञ में अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं अबलाओ पर।

प्रैक्टिकल में देख रहे हो आजकल मेल्स को भी पूतनाएँ–सुपर्णखाएँ बड़ा तंग करती हैं। तो बाप से वर्सा ..... तो सर्विस में तत्पर रहना है। श्रीमत पर .... हो लौकिक या ..... है उनसे भी सर्विस करनी है। ..... ये सर्विस। बॉम्बे में भी अम्बा के मंदिर बहुत हैं। वहाँ भी जाए सर्विस कर सकते हो। ..... कर सकते हो हाँ ऐसे भी सर्विस करेंगे। उन्हों को गवर्मेन्ट शरीर निर्वाह अर्थ देने लिए तैयार है। तो समझते हैं बंदर है। कुछ भी समझने वाला नहीं है। फिर भी मेहनत करो कोई न कोई निकल पड़ेगा। सर्जन बहुत चाहिए। तुम हो अंधो की लाठी। तुम बच्चों के लिए सर्विस तो ढेर है। तुमको कोई से पैसे आदि लेने की इच्छा नहीं है। तुमको तो रहमदिल बनना है। रहमदिल बाप के बच्चे भी है रहमदिल .... बहुतों को मार्ग बतावेंगे। वो पद भी ऊँच पावेंगे। सुनते तो बहुत हैं यहाँ से गई फिर ..... हो जाता। नम्बरवार धारण करते हैं। इसमें बड़ी अच्छी मेहनत करनी चाहिए 21 जन्मों का राजभाग मिलता है। कम बात थोड़े ही है। काँग्रेसी भी कहते हैं सोना हराम है। बाप भी कहते हैं नींद को जीतने वाले बनो। रात को भी कमाई करो। अच्छा, आज भोग है। लखनऊ का गोविंद जिसने अभी–2 सेन्टर खोला था उसने शरीर छोड़ा है। ड्रामा में इनका इतना ही पार्ट था। सेन्टर खोल देने का पार्ट था। तो ..... यहाँ बुलावेंगे। अनन्य बच्चे जो होते हैं वो आते हैं। कोई तो बहुत आँसू बहाते हैं, पछताते हैं। हमने सर्विस न की। बाप का कहना न माना। ऐसे–2 भिन्न–2 प्रकार की होती है। बाबा सा० कराते हैं तुमको कितना कहते थे सर्विस कर आप समान बनाओ। तुमने कुछ नहीं किया। फिर रोते हैं, मार खाते हैं। बाबा सा० कराय फिर सज़ा देते हैं। इम्तहान हो गया रिज़ल्ट निकल गई फिर रोने से कुछ फायदा होगा क्या? {शील माँगने जा रही है} अच्छा, प्रीतम आया हुआ है। प्रीयत्माओं को ले जाने। कहते हैं आओ तो हम तुमको विश्व के महाराजा–रानी बनावें। जो पुरुषार्थ करेंगे वो बनेंगे। स्टार्स में भी नम्बरवार होते हैं। कोई तो बहुत चमकते हैं। तुम पुरुषार्थ कर रहे हो। ऊपर में तुम्हारी पिछाड़ी की रिज़ल्ट का यादगार है। अब तो ग्रहण लगता है। ..... ग्रहचारी बैठ जाती है तो तूफान से निकल नहीं सकते। ग्रहण लगा ये गिरा। ग्रहण बहुतों को लगते हैं। ग्रहचारी माता–पिता को भी भुलाय देती है। परिपूर्ण तो कोई बने न हैं। माया भी रुस्तम से रुस्तम हो लड़ेगी। अच्छा, मात–पिता, बापदादा का नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार यादप्यार और गुडमॉर्निंग। ॐ